विपश्यना

साधकों का
मासिक प्रेरणा पत्र

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2556, फाल्गुन पूर्णिमा, 27 मार्च, 2013 वर्ष 42 अंक 10

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

मोघा जाति च वण्णो च, सीलमेव किरुत्तमं।
सीलेन अनुपेतस्स, सुतेनत्थो न विज्जति॥
खत्तियो च अधम्मट्ठो, वेस्सो चाधम्मनिस्सितो।
ते परिच्चज्जुभो लोके, उपपज्जन्ति दुग्गतिं॥

जातक-अट्ठकथा-३६२, सीलवीमंसजातकवण्णना- ६६-६७.

जाति और वर्ण व्यर्थ है, शील ही श्रेष्ठ है। जो शील से च्युत है, उसके बहु-श्रुत होने का कोई अर्थ नहीं है॥ अधार्मिक क्षत्रिय हो; चाहे अधार्मिक वैश्य हो, वे [देव-लोक तथा मनुष्य-लोक] दोनों लोकों को छोड़, दुर्गति को प्राप्त होते हैं॥

भगवान के मार्ग में जाति-भेद नहीं था

भगवान बुद्ध के सदियों पहले से ही देश में जात-पांत को लेकर अंधकार छाया हुआ था। नीच कुल में जन्म लेने के कारण या हीन कर्म करने के कारण व्यक्ति को नीच और हीन माना जाता था।

व्यवसाय, कर्म और जातियों की उच्च और नीच, हीन और श्रेष्ठ अलग-अलग श्रेणियां थीं --

(१) शूद्र
(२) चांडाल
(३) भंगी और
(४) चमार

ये नीच जातियां मानी जाती थीं।

(१) ब्राह्मण
(२) क्षत्रिय
(३) वैश्य

ये उच्च जातियां मानी जाती थीं।

इसी प्रकार ब्राह्मणों के गोत्र भी हीन और उच्च होते थे -

हीन गोत्र :--

(१) कोसिय गोत्र
(२) भारद्वाज गोत्र

उच्च गोत्र :--

(१) गोतम-गोत्र,
(२) मोग्गलान-गोत्र
(३) कच्चान-गोत्र और
(४) वासिट्ठ-गोत्र

दस्तकारी और शिल्प-कलाएं भी उच्च और निम्न की श्रेणी में बँटी हुई थीं।

उच्च मानी जाने वाली शिल्प-कलाएं और कर्म-कौशल :--

(१) लेखन कला
(२) मुद्रण (छपाई) कला
(३) हिसाब-किताब रखना, मुनीम का कार्य

निम्न समझे जाने वाले कर्म :--

(१) बांस की वस्तुएं बनाना
(२) मिट्टी के घड़े आदि बर्तन बनाना
(३) वस्त्र बुनाई का काम
(४) चर्म-कला (पशुओं की चमड़ी से जूते आदि वस्तुएं बनाने का काम)
(५) नापित कर्म (बाल काटने का कर्म)

अत्यंत हीन और तुच्छ समझे जाने वाले कर्म :--

(१) मल-मूत्र उठाने का काम
(२) मैला, कूड़ा-कचरा उठा कर सफाई करने का काम

उत्कृष्ट समझे जाने वाले व्यवसाय :--

(१) कृषि
(२) वाणिज्य-व्यवसाय
(३) गो-पालन

पालि साहित्य में निम्नलिखित पांच नीच कुल गिनाये गये हैं और इन कुलों के कर्म को **हीन-कर्म** माना जाता था :--

(१) चांडाल कुल - श्मसान में शव जलाना।
(२) नेसाद कुल - पशु-पक्षियों का शिकार करना।
(३) वेनकुल - पाखाना सफाई ।
(४) रथकार कुल - मरे हुए पशुओं के चर्म से वस्तुएं बनाना।
(५) पुक्कुस कुल - कचरा उठा कर सफाई करना।

इसी प्रकार निम्नलिखित कर्म करने वाले व्यक्तियों को भी **हीन** माना जाता था :--

(१) नलकार - बांस का उपयोग करके टोकरी आदि बनाने वाले।

(२) कुंभकार - मिट्टी के घड़े आदि बनाने वाले।

(३) पेसकार - वस्त्र बुनाई का काम करने वाले।

(४) चम्मकार - चमड़े की वस्तुएं बनाने वाले।

(५) नापित - बाल काटने का काम करने वाले।

जो बहुत नीची जाति के थे, उनकी छाया भी किसी पर पड़ जाय तो वह अपने को दूषित हुआ समझता था। कभी-कभी गुस्से के मारे जिसकी छाया पड़ी है, उसे लोग पीटते थे। इसलिए अत्यंत नीची जाति के लोग जब शहर में आते थे तब बड़े दुबक कर चलते थे कि कहीं उनकी किसी पर छाया भी नहीं पड़ जाय।

ऐसी खराब स्थिति में बुद्ध ने एक बहुत क्रांति का कदम उठाया। उन्होंने नीची से नीची जाति वालों को अपने संघ में सम्मिलित कर लिया। और जो संघ में सम्मिलत हो गया, वह अपने आप पूज्य हो गया। राजा भी उसे पूजता है, राज-कर्मचारी भी पूजता है, सेठ-साहूकार भी पूजते हैं और ब्राह्मण भी पूजते हैं। इस प्रकार नीची जाति का उद्धार करने का एक बहुत बड़ा कदम भगवान बुद्ध ने उठाया।

भगवान खुद जात-पांत को नहीं मानते थे। संघ में सम्मिलित होने के बाद जात-पांत की वजह से कोई भेद-भाव नहीं किया जाता था। भिक्षु भी संघ में सम्मिलित होने के बाद उच्च-कुल, नीच-कुल सब के पास भिक्षा के लिए जाते थे। कभी-कभी नीच-कुल वालों को चांडाल और वसल कह करके बुलाया जाता था। कोई नया भिक्षु उस प्रकार का संबोधन करके दूसरों को बुलाता तो भगवान के विनय के अनुसार अपराध घोषित किया जाता था।

उन्हीं दिनों की एक घटना है - प्रकृति नाम की एक षोडशी अछूत कन्या, अपने परिवार के लिए अछूतों के कूंए में से जल भर रही थी। दरिद्रता के मारे मैले-कुचैले, फटे-पुराने वस्त्र पहन रखे थे। सामने से भगवान बुद्ध के शिष्य आनंद चले आ रहे थे। आनंद भी क्षत्रिय कुल में उत्पन्न, गौरवर्ण, प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी और भगवान के ही चचेरे भाई थे। प्रबल गर्मी की ऋतु थी। प्यास के मारे कंठ सूख रहा था। कूंए के समीप इस लड़की को पानी भरते देख कर उससे पीने के लिए पानी मांगते हैं। अछूत-कन्या सहम जाती है। यह व्यक्ति भिक्षु होते हुए भी स्पष्टतया उच्च वर्ण का ही है। लेकिन यह नहीं जानता कि मैं अछूत परिवार की युवती हूं और यह कूंआ भी अछूतों का है। अतः वह आनंद को बताती है कि मैं नीची जाति की लड़की हूं और यह अछूतों का पानी मैं किसी ऊंचे कुल के व्यक्ति को पीने के लिए नहीं दे सकती।

आनंद उस अछूत लड़की को कहते हैं -- ''बहन, मैंने तुमसे पानी मांगा है, जाति नहीं पूछी।''

भिक्षु आनंद के आग्रह पर सहमी-सकुचाई हुई उस अछूत कन्या ने उन्हें जल दिया। प्रसन्नतापूर्वक अपनी प्यास बुझा कर भिक्षु वहां से चल दिया।

यकायक उस अछूतकन्या के मन में विचार आया कि इस उच्चजाति के युवापुरुष ने मेरे हाथ का पानी पी लिया, तो यह मुझे अपनी अर्धांगिनी बनाना भी अवश्य स्वीकार कर लेगा। वह द्रुत-गति से भिक्षु आनंद के पास पहुँची और अपना निवेदन प्रस्तुत किया। भिक्षु ने उसे तुरंत अस्वीकार कर दिया। उसे बड़ी निराशा हुई। तब आनंद ने उस अछूत-कन्या को बताया कि मैं जात-पांत के भेदभाव के कारण तुम्हारा प्रस्ताव अस्वीकार नहीं करता। लेकिन आजन्म ब्रह्मचर्य का व्रत लिए होने के कारण मैं असमर्थ हूं। फिर उसे बताया कि हमारे महाकारुणिक भगवान बुद्ध ने मनुष्यमात्र को शरण दी है। तुम भी उनके यहां जाकर शरण लो। जिन्हें समाज हीन जाति का व्यक्ति मानता है, भगवान उन सबको शरण देते हैं। उनके यहां जाति-जन्म का भेदभाव नहीं है। उनकी शरण में आकर साधना करते हुए सभी अनार्य से आर्य बन जाते हैं। जो आज समाज में दुत्कारे जाते हैं, लोग उन्हीं का सम्मान-सत्कार करने लगते हैं। तुम बेझिझिक भगवान की शरण चली जाओ। वहां अनेक साध्वियां हैं और माता प्रजावती तुम्हारी उचित देखभाल करेगी।

यह सुनकर अछूत कन्या प्रकृति अत्यंत प्रसन्न होकर भगवान की शरण आयी, उसको साधना मिली और आगे जाकर साध्वी हो गयी।

एक समय भगवान बुद्ध अपने भिक्षु-संघ के साथ मगध की राजधानी राजगीर में धर्मचारिका के लिए नगर के राजमार्ग पर जा रहे थे। तब नगर का भंगी सुनीत हाथों में झाड़ू लिए सड़क बुहार रहा था। अत्यंत हीन कुल में उत्पन्न और अस्पृश्य होने के कारण उसके मन में भाव आया कि मेरी छाया भी इन पर नहीं पड़नी चाहिए। अतः सकुचाहट के मारे हाथ बांधे एक ओर खड़ा हो गया। भगवान ने उसके मन के भाव पहचाने। निर्मम, निर्दयी समाज की दूषित व्यवस्था के शिकार भंगी सुनीत को देख कर उनका हृदय करुणा से भर उठा। उन्होंने उसे अपने पास बुलाया और भिक्षु-संघ के साथ राजगीर के वेणुवन विहार में ले गये। उसे विपश्यना साधना की ध्यान-विधि सिखायी। भंगी सुनीत संघ में प्रव्रजित होकर अरण्य में तपने लगा और अनार्य से आर्य अवस्था प्राप्त कर अरहंत बन गया, सही माने में भंगी से ब्राह्मण बन गया।

इसी प्रकार चांडाल कुल में जन्मा एक बालक सोपाक जब वह चार वर्ष का हुआ तो अनाथ हो गया। गरीबी के कारण बोझ-स्वरूप समझ कर सात वर्ष की अवस्था में उसके चाचा ने उस पर क्रोधित होकर श्मसान में एक मुर्दे के शव के साथ उसे कस कर बांध दिया ताकि जंगली पशु उसे चीर-फाड़ कर खा जायँ। महाकारुणिक भगवान ने यह घटना देखी तो एक भिक्षु को भेजा और सोपाक को छुड़ा कर विहार लिवा लाये। वहीं उसकी प्रव्रज्या और उपसंपदा हुई। आगे चल कर चांडाल के घर जन्मा सोपाक साधना में तप कर अरहंत हुआ।

इतिहास में एक और बहुत बड़ा कदम बाबा साहब आंबेडकर ने उठाया, जब उन्होंने ऐसा संविधान रचा जिसमें ऊंच-नीच का कोई स्थान ही नहीं। मनुष्य, मनुष्य है। उन्होंने नीची जाति माने जाने वालों को पढ़ने की सुविधा दी। ऊंची से ऊंची पढ़ाई करके नीची जाति के लोग सरकार में सेक्रेटरी तक बन गये। अब उन्हें कौन नीचा कहेगा? इस प्रकार ऊंच-नीच के भेद-भाव को तोड़ने का बहुत बड़ा काम बाबा साहब आंबेडकर ने किया।

लेकिन फिर भी गांवों में आज तक जात-पांत, ऊंच-नीच और छूआ-छूत की प्रथा कुछ मात्रा में कायम ही है। वह दूर नहीं हो पायी।

मुझे याद है, बर्मा (म्यंमा) में रहते हुए ऐसे कट्टर सनातनी घर में जन्मा और पला। वहां देखता था कि भंगी और चमार ही नहीं बल्कि नीची जाति कहलाने वाले अनेक लोग ऐसे थे, जिनका छूआ पानी भी हम नहीं पी सकते थे। बाबा साहब ने इसमें बहुत कुछ सुधार किया। फिर भी समाज में नीच कुल वाले नीच ही माने गये और उच्च कुल वाले उच्च ही माने गये।

जैसी बड़ी क्रांति भगवान बुद्ध ने नीची जाति वालों को संघ में सम्मिलित करके की, वैसे ही बाबा साहब ने शिक्षा का प्रसार करके उन्हें सम्मानित किया। फिर भी देश का यह दुर्भाग्य पूरी तरह दूर नहीं हुआ।

अब विपश्यना ने एक कदम और आगे बढ़ाया है। उसके शिविरों में सभी जाति के लोग सम्मिलित होते हैं। न कोई नीचा, न कोई ऊंचा, सब बराबरी से साथ रह कर साधना करते हैं। सब एक साथ बैठ कर भोजन करते हैं, साथ ही रहते हैं। अब तो स्थिति यहां तक आ गयी है कि बड़ी संख्या में दलित कहलाने वालों को विपश्यना में आगे प्रशिक्षित करते हुए आचार्य पद पर स्थापित कर दिया गया है। अब एक दलित वर्ग का व्यक्ति जब आचार्य-आसन पर बैठता है तब वह दलित नहीं बल्कि धर्म का शिक्षक है। जो साधना में सम्मिलित होते हैं, वे सब चाहे ब्राह्मण हों, क्षत्रिय हों या वैश्य हों, सब विपश्यना के उस आचार्य को सिर नवाते है, नमन करते हैं और उससे धर्म सीखते हैं। भगवान की विद्या में जात-पांत का भेदभाव नहीं है, विपश्यना विद्या और आचरण ही प्रमुख है, जो सबको उपलब्ध है। आपसी भेद-भाव को तोड़ने का एक महत्त्वपूर्ण कार्य विपश्यना कर रही है। देखें, इसका कितना प्रभाव सारे समाज पर होता है! समाज का और देश का यह दुर्भाग्य दूर होगा, तभी मंगल होगा! तभी कल्याण होगा!!

कल्याणमित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

आवश्यकता है पगोडा पर सुयोग्य मार्ग-दर्शकों की

पगोडा देखने आने वालों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। उन्हें ठीक से समझाने, दिखाने आदि के लिए बहुत ही मृदुभाषी, सुभाषी, समझाने में निपुण सुयोग्य मार्ग-दर्शकों की **बड़ी मात्रा में** आवश्यकता है। साधक कृपया अपने बारे में स्वयं जांच करें और पूरे विवरण के साथ आवेदन-पत्र निम्न ईमेल पर भेजें या निम्न फोन से **यथाशीघ्र** संपर्क करें। आने-जाने का खर्च, भोजन, विश्राम, सेवा एवं ध्यान-भावना का लाभ मिलेगा। फोन : (91) 22-28451204, (91) 22-33747501 (30 lines), ईमेल-- pr@globalpagoda.org ;

ग्लोबल पगोडा परिसर में (परियत्ति और पटिपत्ति) पालि - पाठ्यक्रम-२०१३

आवासीय पाठ्यक्रम:-- **९० दिवसीय : पालि-अंग्रेजी; अवधि -** १-७-१३ से ३०-९-१३ तक; आवेदन की तिथि-१५-५-१३ तक; आवेदन पत्र-- www.vridhamma.org से भी भेज सकते हैं. **संपर्कः** विपश्यना विशोधन विन्यास (VRI), ग्लोबल विपश्यना पगोडा, एस्सेल वर्ड के पास, बोरीवली (पश्चिम), मुंबई - ४०००९१.

बुद्ध-शिक्षा और विपश्यना पर एक वर्षीय पालि डिप्लोमा कोर्स

वि.वि.वि. (VRI) एवं मुंबई विश्वविद्यालय के दर्शन-विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में वर्ष १३-१४ के लिए **अंग्रेजी माध्यम** से **पालि डिप्लोमा कोर्स** निर्धारित किया गया है, जिसमें भगवान बुद्ध की शिक्षा के सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक पक्षों का निरूपण किया जायगा। **स्थल**- 'ज्ञानेश्वर भवन', दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, विद्या नगरी परिसर, कालीना, सांताक्रुज (पूर्व), मुंबई-४०००९८. **आवेदन-पत्र** उक्त स्थल से १ से १५ जुलाई, सोम से शुक्र तक, ११-३० से २-३० बजे के बीच. **कोर्स-अवधि** २०-७-१३ से ३१-३-२०१४ तक. **समय**-- अपराह्न २-३० से सायं ६-३० बजे तक. **योग्यता**-- कम से कम १२वीं उत्तीर्ण छात्रों के लिए, जिन्हें दीवाली अवकाश में विपश्यना शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा.

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें– १). डॉ शारदा संघवी – फोनः ०२२-२३०९५४१३, मो. ०९२२३४६२८०५, **ईमेलः** s_sanghvi@hotmail.com;
२) श्रीमती बलजीत लाम्बा : फोनः ०९८३३५१८९७९;
३) अलका वेंगुलकरः मो.– ०९८२०५८३४४०.

अतिरिक्त उत्तरदायित्त्व

आचार्य

1. U Myat Kyaw, To serve as Centre Teacher for Dhamma Mandala, Mandalay, and co-ordinator for jail courses in Myanmar.
2. Daw Saw Mya Yee, To serve as children course co-ordinator in Myanmar

3-4. Dr. Khin Maung Aye & Dr. Daw Kyi Sein, UK, To conduct courses in Prisons, (Except in Myanmar)

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री सुदर्शन ग्रोवर, ठाणे, धम्मगिरि के केंद्र आचार्य की सहायता

सहायक आचार्य

१. श्री नवीनचंद्र मेहता, डोंबीवली, धम्मगिरि के केंद्र आचार्य की सहायता

नये उत्तरदायित्त्व

वरिष्ठ सहायक आचार्य

१. श्री दिलीप काटे, सोलापुर
२. श्री महावीर प्रसाद जैन, अमरावती
३. श्री माणिक चिकाटे, चंद्रपुर
४. श्री बाबूराव ठाकरे, नागपुर
५. श्री प्रेम नारायण शर्मा, नागपुर
६. श्रीमती पुष्पलता कोलते, चंद्रपुर
७. श्री कौशलेंद्र प्रताप सिंह, दिल्ली
८. डॉ. सुभाष सेठी, गुड़गांव
९. श्रीमती जस मदान, फरीदाबाद
१०. श्री राजेंद्र प्रसाद, नई दिल्ली
११. श्री कौशलकुमार भारद्वाज, दिल्ली
१२. श्री गुनीतसिंह लेहल, नई दिल्ली
१३. श्री अशोक आर. बाभले, मुंबई
14. Mr. Itai Brauer, Israel
15. Mr. Norman Faulkner, Canada

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री केवल चंद जैन, हैदराबाद
२. श्री अनिल जरीवाला, सूरत
३. श्री प्रह्लाद गजबे, नागपुर
४. श्रीमती उज्ज्वला अड्डिगा, सिकंदराबाद
५. श्री विजयकुमार खन्ना, लखनऊ
६. श्रीमती कुमुद शाह, मुंबई
७. श्रीमती दमयंती बोदाना, मुंबई
८. कु. पूर्णिमा शाह, अंकलेश्वर
९. श्री श्रीधर वानखेडे, अकोला
१०. श्री सुहास कांबले, पुणे
११. श्रीमती शशिप्रभा गर्ग, बरनाला
१२. श्री एन.आर. मधुकर, बीरमगुडा
१३. श्री वामन बैंगाने, नागपुर
१४. श्री बिजय बहादुर राजभंडारी, नेपाल
१५. श्री गोपालदास महर्जन, नेपाल
१६. श्री शंकरराज शाक्य, नेपाल
१७. श्री सुरेश लाल श्रेष्ठ, नेपाल
१८. श्रीमती शर्मिष्ठा उदास, नेपाल
१९. अनागारिका सोना, नेपाल
२०. श्रीमती विद्या शाक्य, नेपाल
२१. कु. सबिता बज्राचार्य, नेपाल
२२. कु. फूल डंगोल, नेपाल
२३. श्री खड्ग बहादुर कर्की, नेपाल
२४. टिकाराम उपाधाय, नेपाल
25. Mrs. Karen Chapman, UK
26. Ms. Anneke Kruijer, the Netherlands
27. Mrs. Derbhail Ryan, Ireland
28. Ms. Siu Lan Eva Kwok, Hong Kong
29. Mrs. Chandini Dharmakirti, Australia
30. Ms. Marguerite Kiss, France
31. Mr. Chaiwat Limchitti, Thailand

बाल-शिविर शिक्षक

१. श्रीमती वंदना पारख, दिल्ली
२. श्री अनिल करांदे, कोल्हापुर
३. श्री अमोल मिठारी, कोल्हापुर
४. श्री सचिन पोवार, इचलकरंजी
५. श्री शंभाजी मोहिते, कोल्हापुर
६. श्री नागेश स्वामी, सतारा
७. श्री विजय लांडगे, सांगली
८-९. श्री रवींद्र एवं श्रीमती सुनीता मेश्राम, रत्नागिरि
१०. डॉ. श्रीमती किरन अमीन, जबलपुर
११. डॉ. गुलशनराय माकन, जबलपुर
१२. श्रीमती नीना कपूर, पटना
13. Mr Mg Thiha, Myanmar
14. Ms. Ma Su Thet, Mon, Myanmar
15. Ms Daw Nan Kyu Aye, Myanmar
16. Mr Mg Kyaw Kyaw Naing, Myanmar
17. Ms Daw Moh Moh Kyi, Myanmar
18. Ms Daw Than Than Hyein, Myanmar
19. Mrs Ma Myat Thin Su, Myanmar
20. Mrs. Chui Mei Wee, Singapore
21. Mr Mein Chow Seow, Singapore
22. Ms. Chwe keng Tan, Malaysia
23. Mr Happy Choo Kai-Meng, Malaysia
24. Ms. Komala Thavi, Malaysia
25. Ms. Beng Kim Beh, Malaysia
26. Mr. S Pathmanathan, Malaysia
27. Mr. Christopher Marquardt, USA
28. Mrs. Oom Marquardt, USA
29. Mrs. Anh Huynh, USA
30. Mr. Rafael Caudros, USA
31. Ms.Vikky McArthur, USA
32. Mr. Thomas Hicks, Canada
33. Mr Tom Wolfe, UK
34. Mr Nicholas Potter, UK
35. Mr Tom Pope, UK

Registered No. NSK/235/2012-2014

WPP Postal License No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014

मंगल मृत्यु

घाटकोपर (मुंबई) के श्री नटवरलाल दलाल विगत ७ जनवरी को हृदयगति रुक जाने से दिवंगत हुए। उन्होंने १९९७ से सहायक आचार्य के रूप में साधकों की खूब सेवा की। अन्य प्रकार से भी धर्मसेवाएं देते रहे। दिवंगत को शांतिलाभ प्राप्त हो।

इसी प्रकार घाटकोपर (मुंबई) के ही श्री प्रवीणचंद्र देसाई २००७ से सहायक आचार्य के रूप में सेवा दे रहे थे। कुछ समय से वे अपने गांव राजकोट में रह रहे थे और वहां के केंद्र धम्मकोट में अनेक शिविरों का संचालन किया। हृदयरोग के कारण उनकी मृत्यु हुई परंतु इसकी सूचना हमें बहुत देर से प्राप्त हुई। धर्मसेवाओं के फलस्वरूप दिवंगत को शांतिलाभ प्राप्त हो।

कोटा (राजस्थान) के श्री बालचंद पोद्दार म्यंमा में पूज्य गुरुदेव के बचपन के साथी थे और परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ बा खिन से विपश्यना साधना सीखी थी। भारत आकर व्यापार-धंधे में लग गये। विपश्यना जब भारत लौटी तब यहां भी शिविरों में सम्मिलित हुए। उनका पूरा परिवार १९७० के दशक से ही धर्म-प्रसारण एवं निर्माण-कार्यों में सहयोग करता रहा है। गत १ फरवरी को उन्होंने शांतिपूर्वक अंतिम सांस ली। अपनी पुण्य पारमिताओं के फलस्वरूप वे भी शांतिलाभी हों!

दो दिवसीय निवासीय बाल-शिविर

धम्मवाहिनी, टिटवाला विपश्यना केंद्र पर **१२ से १५ वर्ष** के बच्चों के लिए **दो** दिवसीय **निवासीय शिविर** आयोजित किये जा रहे हैं। साधक कृपया नीचे लिखी तिथियां और बुकिंग का समय देख कर, सही समय पर बच्चों के लिए बुकिंग (रजिस्ट्रेशन) अवश्य करायें।

(१) आगामी २६ व २७ मई को **केवल लड़कों** के लिए, बुकिंग **१५ मई** के बाद, फोन नं. ०२२-२५१६२५०५/२५०११०९६ पर ऑफिस काल में संपर्क करें। (२) इसी प्रकार ६ एवं ७ जून को, **केवल लड़कियों** के लिए, बुकिंग **२५ मई** के बाद, फोन नं. ०२२-२५१६२५०५/२५०११०९६ पर ऑफिस काल में संपर्क करें। धन्यवाद!

किशोर-किशोरियों (१५ से १९ वर्ष) के ८ दिवसीय शिविर

धम्मवाहिनी पर **१७ से २५ मई** केवल **किशोरों** के लिए, **२८-५ से ५-६** तक केवल **किशोरियों** के लिए। **अन्य केंद्रों** पर भी **किशोर-किशोरियों** के शिविर अलग से निश्चित हुए हैं। कृपया **शिविर-कार्यक्रम** के पहले पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखें और विवरण तथा बुकिंग के लिए संबंधित केंद्रों से संपर्क करें।.

बुद्धपूर्णिमा के अवसर पर पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में एक दिवसीय महाशिविर

25 मई, 2013, **शनिवार**, **समयः** प्रातः **11** बजे से अपराह्न **4** बजे तक, **'ग्लोबल विपश्यना पगोडा'** के बड़े धम्मकक्ष (डोम) में। **पूज्य गुरुजी का प्रवचन ३ बजे होगा। इसमें बिना साधना किये लोग भी बैठ सकते हैं। शिविर के लिए बड़ी संख्या में धर्मसेवकों की भी आवश्यकता है। इसके लिए कृपया निम्न फोन नंबरों या ईमेल से शीघ्र संपर्क करें।** कृपया ध्यान दें कि इस विशाल शिविर में आपको किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसलिए **बिना बुकिंग कराये न आएं। बुकिंग संपर्क : फोन नं.: 022-28451170 / 022-33747501- Extn. 9, 022-33747543 / 33747544, (फोन बुकिंग :** प्रातः **11** से सायं **5** तक, प्रतिदिन)
ईमेल Registration: oneday@globalpagoda.org
Online Regn: www.vridhamma.org

दोहे धर्म के

जाति वर्ण का गोत्र का, चढ़ा शीश अभिमान।
शुद्ध धरम को छोड़कर, भटक गया नादान॥
जहां जाति का, वर्ण का, जहां गोत्र का नाज़।
धरम न टिक पाये वहां, अहंकार का राज॥
जब जब मनुज समाज में, जातिवाद बढ़ जाय।
तब तब मंगल धरम के, सुमन सभी कुम्हलायँ॥
शुद्ध धरम जग में जगे, तो हों सब खुशहाल।
संप्रदाय जब प्रमुख हो, तो हों सब बदहाल॥
बढ़ा धर्म के नाम पर, संप्रदाय पुरजोर।
जन जन मन व्याकुल हुआ, दुख छाया सब ओर॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

जात-पांत रो बावळो, सीस चढायो भूत।
धरम छूटग्यो साचलो, रहग्यी छूआछूत॥
जात-पांत रो, बरण रो, किसो'क गरब गुमान।
मूढ होयग्या, धरम रो, रह्यो न नाम-निसाण॥
सै कूआं मँह एक सी, पड़ी मोह री भंग।
संप्रदाय री वारुणी, सैं का बिगड़्या ढंग॥
अपणै मत री मान्यता, मति पर आगळ देय।
संप्रदाय री वारुणी, धरम न समझण देय॥
जात-पांत री विसमता, ऊंच-नीच रो भेद।
साम्य धरम जद स्यूं छुट्यो, हुयो नाव मँह छेद॥
संप्रदाय प्यारो लगै, धरम न धारै कोय।
संप्रदाय मँह सुख कठै? धरम धार सुख होय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक: राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422 403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422 007. **बुद्धवर्ष 2556, फाल्गुन पूर्णिमा, 27 मार्च, 2013**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/235/2012-2014**

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2012-2014
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422 403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422 403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086, 243712,
243238. **फैक्स :** (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org